इतिहासकार बच्चे

प्रभात

अकाल पर कोई नई रचना सामने आती है तो शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय की कहानी 'महेश', विजयदान देथा की कहानी 'आशा अमरधन' और नागार्जुन की कविता 'अकाल और उसके बाद' जेहन में कौंध जाती है। शरत की कहानी महेश अकाल में एक किसान, उसकी लड़की और उनके बैल 'महेश' के अकाल की विभीषिका में साथ और बिछोह के बीच जूझती हुई मानवीय संवदेनाओं की करुण कहानी है। विजयदान देथा की कहानी 'आशा अमरधन' में राजस्थान के एक इलाके में अकाल के मार्मिक विवरण हैं। अकाल-महामारी जैसी आपदाओं में सदियों से चले आ रहे रिश्ते कैसे तार-तार हो जाते हैं, खून के रिश्ते कैसे जर्जर और क्षरित हो जाते हैं, इसकी विडम्बना मर्म को भेद देने वाली कहानी है। नागार्जुन की 'अकाल और उसके बाद' कविता इन दो कहानियों के सामने सामान्य नजर आती है मगर वह भी अकाल के दौरान और उसके बाद की स्थितियों का बहुत कम शब्दों में एक चित्र प्रस्तुत करती है। कैसे अकाल के दौरान जीवन धीरज खोता है और कैसे अकाल के बाद घर में दाने आने से जीवन की रौनक लौटती है और आशा का संचार इंसानों, अन्य जीव-जंतुओं और प्रकृति में होता है। एकलव्य से फरवरी 2014 में प्रकाशित हुई किताब 'रूखी-सुखी' पश्चिमी निमाड़ में अकाल और आदिवासियों के अनुभवों पर एक संवेदनशील और मर्मस्पर्शी दस्तावेज है। यह किताब कहानी नहीं है लेकिन इसमें दर्ज आदिवासियों की स्मृतियां हमें ऐसी कहानियों में ले जाती हैं कि वे हमें अविश्वसनीय लगती हैं मगर वे अकाल के दौर की करुण सच्चाइयां हैं। इस किताब में कोई कविता नहीं है लेकिन मानव कैसे-कैसे कल्पनातीत उपाय कर-करके खुद को जीवित रखता रहा, वे विवरण अपने-आपमें कविताएं हैं। इस किताब की एक और खास बात यह है कि यह सब कुछ बच्चों ने दर्ज किया है। इस किताब की ऐतिहासिक विषयवस्तु बच्चे खोजकर लाए हैं। किताब के पिछले आवरण पर लिखा है कि "इसमें दी गई जानकारी जिला पश्चिमी निमाड़ के साकड़ गांव में बसे आधारशिला शिक्षण केन्द्र में पढ़ने वाले विद्यार्थियों ने साकड़, चाटली, मोगरी व कुंजरी गांव के बड़े-बूढ़ों से पूछकर इकट्ठी की हैं।"

"बच्चे जब लोगों की बातें लिखकर लाए तो पता चला कि पुराने अकाल की रोचक बातों से ही उनकी कॉपियां भरी थीं। ...ये बातें आसपास के गांव के दस-बारह बुजुर्गों से पूछकर लिखी गई थीं। इनमें 1889 के मशहूर छप्पनियां अकाल से लेकर हाल के अकालों की बातें मिली-जुली थीं।

इस जानकारी को प्रश्नवार बांटकर लिखने का बड़ा संपादकीय काम भी बच्चों ने ही किया। कुछ बातें जो नहीं पता चलीं, उन्हें दोबारा जाकर पूछा। इस पूरे काम में एक-डेढ़ महीने का समय लगा।"

असल में इस किताब की पूरी कल्पना ही अनूठी है। जाहिर है आधारशिला शिक्षण केन्द्र के शिक्षकों ने बच्चों की मदद की लेकिन बच्चों को सुविचारित ढंग से एक ऐसे उपक्रम में तल्लीन कर देना जिसमें सारी खोजबीन, शोध खुद करना है, शिक्षण का यह तरीका रवीन्द्रनाथ टैगोर के शांतिनिकेतन और मशहूर रूसी शिक्षक और

शिक्षाविद्, *बाल हृदय की गहराइयां* के लेखक वसीली सुखोम्लीन्स्की के प्रकृति के सानिध्य में शिक्षण के अनूठे तरीकों की याद ताजा कर देता है। इस किताब के लिए नर्गिस शेख ने कमाल का चित्रांकन और डिज़ाइन का काम किया है। फोटोग्राफी का बहुत सुंदर संयोजन किया है। अपने पूरे कलेवर में यह किताब, अकाल की सांवली छायाओं में प्रतिबिम्बित दिखाई देती है। केवल शब्दों में ही नहीं इसकी प्रस्तुति में भी दुर्भिक्षों की मर्मर बुदबुदाहटें सुनाई देती हैं। हर पृष्ठ के दृश्य आपकी आंखों को रोक लेते हैं, रोककर आपसे उदास बातें कहते हैं। जिन्हें आप हर्गिज अनसुना नहीं कर सकते। ''नर्गिस शेख मातोश्री, कॉलेज, नासिक से इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रही हैं।''

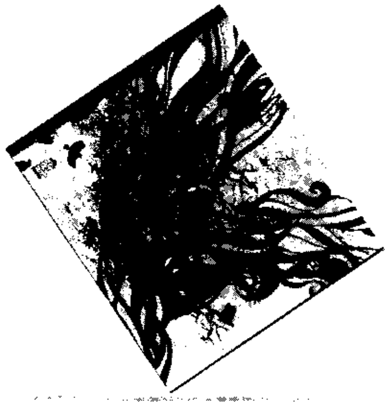

रूखी-सूखी
प्रकाशक: एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजीनगर, भोपाल-462016 मध्यप्रदेश
मूल्य: 45 रुपये

यह किताब प्रकाशकीय रचनात्मकता को भी बताती है। प्रकाशन के स्तर पर नवाचार क्या हो सकता है, कैसे संभव हो सकता है, इसकी यह एक बानगी है। किसी भी प्रकाशन के लिए लीक से हटकर किताब लाना चुनौती और जोखिम भरा होता है।

बच्चों ने 1889 के छप्पनियां अकाल के अलावा 1917, 1943, 1969 और 1984 में पड़े अकालों के बारे में जानकारी जुटाई है। बच्चों ने दर्ज किया है कि ''एक बार उन्दर काल पड़ा था। उस साल चूहे बहुत बढ़ गए थे। चूहों ने सारी फसल खा ली। अनाज भी चूहे खा गए। इसीलिए उसे उन्दर काल कहते हैं। कुछ लोगों का कहना है कि इस अकाल में लोगों ने चूहों की लेण्डियां धोकर, पीसकर खाई थीं।'' चूहों की लेण्डियां धोकर, पीसकर खाना मेरे लिए एक हैरतअंगेज और अविश्वसनीय तथ्य था। ऐसे तथ्य इस कितबिया में जगह-जगह बिखरे पड़े हैं। कितबिया बताती है कि- ''अकाल में कुछ भी नहीं पका। जिसको जो मिला वह खा जाता था। पेड़ की पत्ती, छाल, बैल-गाय की हड्डियां-किसी भी चीज को पीसकर खा जाते थे।''

''अनाज की कमी के कारण राबड़ी इतनी पतली बनाते थे कि जब थाली में लेकर इसे पीने बैठते थे तो घर की छत के डांडों की परछाई उसमें दिखाई देती थी।''

''हड्डियां अपन नहीं खाते, लेकिन अकाल पड़ा तो उसको भी खाना पड़ा। उसको क्या किया कि हड्डी का आटा बना दिया और उसकी रोटी ही खानी पड़ी। अपने में से कोई भी बैल का मांस खाता है तो उसको कुटवाल कहते हैं, लेकिन उसको भी खाना ही पड़ा। मरे जानवरों को भी लोगों ने खाया। नहीं खाऊंगा बोलने वाले को भी खाना ही पड़ा। कीड़े भी भूनकर खाए। ...जंगली लोमड़ी चिल्लाती रहती थी।''

''चिड़िया बैल की पीठ पर बैठकर, उसकी चमड़ी पर चोंच मारकर बैल को मार देती थी।''

अकाल में लूटपाट शीर्षक टिप्पणी में लिखा है, ''लूटने वाले जिन्दा जानवरों को भी नोंच-नोंचकर खा जाते थे। ...जिसके पास अनाज था वह जमीन में गाड़कर रखता था। ...चूल्हे का धुंआ देखकर भी भूखे लोग आ जाएंगे, सोचकर छुप-छुपके रोटी बनाकर खाते थे।''

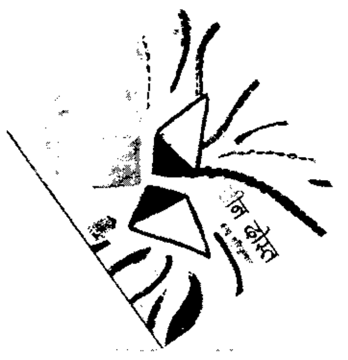

तीन दोस्त
प्रकाशक: एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजीनगर, भोपाल-462016 मध्यप्रदेश
मूल्य: 35 रुपये

सरकारी मदद का हाल देखिए, ''सरकार सेंधवा के किले के ऊपर से भूखे लोगों के लिए धाणी फेंकती थी। बहुत से लोग इस धाणी को खाकर मर गए।'' जाहिर है सरकार के गोदामों में पड़ा-पड़ा खाद्यान्न विषाक्त हो चुका था।

इस किताब के बारे में बताते हुए प्रकाशकीय टिप्पणी में लिखी गई ये पंक्तियां भी रेखांकित करने योग्य हैं कि ''यह प्रयास दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। एक तो स्कूली स्तर पर बच्चों को इतिहास बोध कराने व ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया की दृष्टि से। दूसरे, आज खाद्यान्न

संकट पर ऊंची-ऊंची इमारतों में बड़े-बड़े अधिकारियों और विशेषज्ञों के बीच अनन्त बहसें जारी हैं। इन उच्च स्तरीय बहसों से भी वही बात निकलकर आ रही है जो इस सरल से शोध से स्पष्ट है कि इस संकट से जूझने के लिए जैव-विविधता सशक्त हथियार है जो लोगों व देश को आत्मनिर्भर बनाने की ताकत रखता है।''

नया स्वेटर
प्रकाशकः एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजीनगर, भोपाल-462016 मध्यप्रदेश
मूल्यः 42 रुपये

'नया स्वेटर' और 'तीन दोस्त'' भी एकलव्य से ही प्रकाशित दो और किताबें हैं जिनकी यहां चर्चा करनी है। दोनों की क्रमशः कमजोर और कमजोरतर किताबें हैं। 'नया स्वेटर' भोपाल की बस्तियों में शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रही संस्था 'मुस्कान' और एकलव्य का संयुक्त प्रकाशन है। इसी वर्ष 2015 के अप्रैल में प्रकाशित हुई यह किताब पपतू धुर्वे द्वारा लिखी हुई है। ''पपतू धुर्वे भोपाल की एक बस्ती में रहती हैं और जीवनयापन के लिए कबाड़ बीनने का काम करती हैं। वह आज़ाद किस्म की इंसान हैं और ज़िन्दगी की चुनौतियों का निडरता से समाना करती हैं। उसकी कहानियां उसके जीवन के अनुभवों से उपजती हैं और उस ताकत और मजबूती के बारे में बताती हैं जो उसे अपने अंदर और बाहर से मिलती है।''

कूड़ा-कर्कट बीनने वाले बच्चे मेरे शहर में भी हैं और भी अनेक शहरों में दिखते हैं और उनके बीच कार्य करती स्वयंसेवी संस्थाएं भी हैं लेकिन एक तो उनका इस तरह से कायापलट होते नहीं देखा कि वे जिन्दगी की चुनौतियों का निडरता से सामना कर पाएं और अपने कूड़ा-ककर्ट पर निर्भर जीवन में वे आजाद किस्म के इंसान बनकर रह पाएं। यह कहानी कूड़ा बीनने वाले बच्चों के जीवन के भयावह यथार्थ की कहानी के बजाय एक शिक्षाप्रद प्रेरक प्रसंग की तरह है जिसमें यह बच्ची अपनी कमाई से पैसे बचाकर स्वेटर खरीदने का सपना पूरा कर लेती है। इसका चित्रांकन भी जीवन के हाशिए पर टिके हर दृष्टिकोण से वंचित वर्ग के जीवन से दूर के प्रतीत होते हैं। चित्रों में सुंदर-सुंदर सा, बेचैनी रहित जीवन है जो कि कूड़ा बीनने वालों का प्रायः नहीं होता है।

'तीन दोस्त' बच्चों के लिए कई किताब लिख और डिजाइन कर चुकी इन्दु हरिकुमार की किताब है। इसके चित्र व कहानी इन्हीं की है। इन्दु हरिकुमार अपने चित्रांकन में कपड़ों और उनकी सिलाई का प्रयोग करते हुए डिजाइन करती हैं, कई बार यह संयोजन खूबसूरत बन पड़ता है। इस किताब में भी वैसे प्रयोग हुए हैं जो कुछ जगह सुखद प्रतीत होते हैं। पर कुल मिलाकर यह किताब कोई प्रभाव नहीं छोड़ पाती है। ऐसा क्यों है? इसकी वजह शायद इसकी बेहद साधारण और फार्मूला किस्म की कहानी है। कल्पनाएं कितनी भी दूर की या चमत्कृत करने की मशक्कत में लगी हुई क्यों न हों, असल में जब वे कोरी कल्पनाएं ही हैं तो उस बंजर के समान हैं जिसमें से जीवन की धड़कन गायब है। किसी रचना में जीवन नहीं धड़कता तो फिर वह आखिर क्या होगा जो पाठक के मन को छूएगा। कोई पाठ आरंभिक स्तर के बच्चों के लिए है तो उसे सरल होना चाहिए सरलीकृत नहीं। ◆

लेखक परिचयः प्रभात, राजस्थान के जाने-माने युवा कवि हैं। एकलव्य, भोपाल; रूम टू रीड, इण्डिया एवं अन्य प्रकाशनों से बच्चों के लिए कविता एवं कहानियों की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहे हैं।